Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ जयापार्वती व्रत कथा ॥

॥ जय माँ जयापार्वती ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वामन और सत्या की कथा ॥

यह जयापार्वती व्रत की प्रचलित वामन-सत्या कथा का स्वतंत्र, संक्षिप्त हिंदी रूपांतरण है। कथाओं और स्थानीय पूजन में अंतर हो सकता है।

कथा की भूमिका में माता लक्ष्मी ने भगवान विष्णु से किसी उत्तम व्रत के बारे में पूछा। विष्णु ने माता पार्वती से जुड़े जयापार्वती व्रत की कथा सुनाई। पुराने समय में कौंडिन्य नाम के नगर में वामन नामक विद्वान ब्राह्मण और उनकी पत्नी सत्या रहते थे।

दोनों का घर सुख-सुविधाओं से भरा था, पर संतान न होने से वे दुखी रहते थे। एक दिन देवर्षि नारद उनके घर आए। वामन और सत्या ने आदर से उनका स्वागत किया और अपनी व्यथा बताई। नारद ने उन्हें वन में बिल्व वृक्षों के पास स्थित शिवलिंग पर शिव-पार्वती की श्रद्धा से पूजा करने का सुझाव दिया।

दोनों वन पहुँचे, पूजा स्थान साफ किया और जल, बिल्वपत्र तथा उपलब्ध पुष्पों से पूजन करने लगे। फिर वे नियमित रूप से वहाँ जाते रहे। लंबे समय तक आराधना करते हुए उन्होंने आशा और धैर्य बनाए रखा।

एक दिन वामन फूल चुनने वन गए और बहुत देर तक लौटे नहीं। सत्या चिंता में उन्हें खोजने निकलीं। वन में वामन को अचेत देखकर वे घबरा गईं और माता पार्वती को पुकारने लगीं।

॥ माता पार्वती का आशीर्वाद ॥

लोककथा में बताया जाता है कि वामन को सर्प ने काटा था। माता पार्वती सत्या की पुकार सुनकर प्रकट हुईं और अपनी कृपा से उन्हें पुनर्जीवित किया। पति-पत्नी ने देवी को प्रणाम किया और संकट की घड़ी में मिली सहायता के लिए आभार व्यक्त किया।

देवी ने सत्या से वर माँगने को कहा। सत्या ने परिवार में संतान का सुख चाहा। तब माता ने आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी से आरंभ होने वाले जयापार्वती व्रत की रीति बताई: पाँच दिनों तक पूजन, प्रचलित निरलवण आहार और अंतिम रात्रि जागरण।

घर लौटकर वामन और सत्या ने देवी के बताए अनुसार व्रत का संकल्प लिया। कथा में कहा जाता है कि बाद में उन्हें पुत्र हुआ। यह प्रसंग आस्था, धैर्य और कृतज्ञता का प्रतीक है; इसे संतान या स्वास्थ्य संबंधी निश्चित परिणाम का वादा नहीं समझना चाहिए।

कथा से सीख

संकट में एक-दूसरे का साथ देना, नियमित साधना और घर में करुणा बनाए रखना इस कथा के प्रमुख भाव हैं। वास्तविक सर्पदंश या बेहोशी में तुरंत आपात चिकित्सा लें; कथा का चमत्कार चिकित्सा का विकल्प नहीं है।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥